द्वितीय अध्याय

अलका सरावगी का जीवन और सृजन

अलका सरावगी : जीवन और व्यक्तित्व

अलका सरावगी का व्यक्तित्व अपने काल की सशक्त मिशाल है। साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में इनका नाम उल्लेखनीय है। साहित्यकार जिस वातावरण में रहता है, जो संघर्ष वह अपने जीवन में करता है तथा उन संघर्षों से जो अनुभव प्राप्त करता है उसी की अभिव्यक्ति वह सर्जनशील कल्पना के द्वारा प्रस्तुत करता है। परिणामतः किसी भी साहित्यकार की साहित्यिक कृतियों को समझने के लिए व्यक्ति परिचय महत्वपूर्ण होता है।

अलका सरावगी का जन्म 17 नवम्बर, 1960 में कोलकाता, पश्चिम बंगाल में हुआ। उनके पिता का नाम केशवप्रसाद केजरीवाल है जो अनुशासनप्रिय और बच्चों की शिक्षा के प्रति सचेत थे। इनकी माताजी कुशल, सामान्य और धार्मिक प्रवित्ति की गृहणी थी। अलका सरावगी अपनी माँ को ताई कहती हैं। इनके पिता केशवप्रसाद एक सफल और कुशल व्यवसायी होने के साथ-साथ परोपकारी और गंभीर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।

अलका सरावगी बचपन से ही प्रतिभा संपन्न और कुशाग्र बुद्धि की थी। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता शहर में पूरी हुई है तथा विधिवत शिक्षा बारहवीं कक्षा तक हुई। इसके उपरांत इन्होंने बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने विवाह के पूर्व ही स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली थी। अलका सरावगी का विवाह 20 वर्ष की आयु में सन 1980 ई. में महेश सरावगी के साथ संपन्न हुआ। जिसके कारण उनकी शिक्षा में कुछ समय के लिए व्यवधान आया, परन्तु उनके पिता के सूझबूझ और पति के सहयोग से वे पुनः अध्ययनरत हुई। सन 1988 ई. में दो बच्चों की माँ होते हुए भी इन्होंने स्नातकोत्तर की उपाधि ग्रहण की।

सरावगी जी का स्नातक का विषय हिंदी साहित्य न होने के कारण उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा, फिर भी उन्होंने स्नातकोत्तर उपाधि प्रथम श्रेणी में हासिल की।

अलका सरावगी जी के पिता मान्यताओं और परम्पराओं में बंधे थे। इस कारण इन्होंने अपनी बेटियों पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगा रखे थे। माध्यमिक शिक्षा होने के उपरान्त उनके पिता ने कॉलेज में दाखिला करवाया, ताकि विवाह हेतु अच्छा वर मिल सके। अलका सरावगी स्वयं कहती हैं, -"मेरे व्यवहारिक पिता का ही शुक्र है कि कॉलेज की आइरिश प्रिंसिपल सिस्टर मेव के मुंह से यह चुभता हुआ वाक्य सुनने के लिए मै कॉलेज तक पहुँच ही गयी 'तुम लोग यहाँ पढ़ने थोड़े ही आई हो, शादी की प्रतीक्षा करते हुए शादी के बाजार में अपनी कीमत बढ़ाने आई हो।"[1]

अलका सरावगी एक संवेदनशील, स्पष्टवादी और बुद्धिमति स्त्री हैं। घर परिवार और गृहणी के दायित्व को निभाते हुए कथाकार अलका सरावगी का जीवन मारवाड़ी परिवेश में व्यतीत हुआ। मारवाड़ी परिवेश में तात्कालीन सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं को देखते हुए स्त्रियों पर कई प्रतिबंध लगाये हुए थे। उस समय मारवाड़ी परिवेश में शिक्षा का स्तर निम्न था, इसलिए अलका सरावगी के पिता ने भी लड़कियों की शिक्षा का मापदण्ड ऊँचा करने की अपेक्षा विवाह करना अधिक उचित समझा। अलका सरावगी अपनी शिक्षा और विवाह से संबंधित तथ्य को स्वीकारते हुए कहती हैं -"यह मानदण्ड मेरी माँ की शादी के वक्त यदि छठी-सातवीं कक्षा तक शिक्षित होना था, तो हम बहनों के लिए इसकी छूट बढ़कर उच्चतर माध्यमिक या कॉलेज दाखिला होना हो गया था। यदि मेरी माँ के लिए सिलाई-कढ़ाई, खाना बनाना वगैरह जरूरी योग्यताएं थी तो हमारे बायोडाटा (परिचय पत्र) में तैराकी, गाड़ी चलाना, चित्रकारी, संगीत वगैरह-वगैरह योग्यताएं भी शामिल कर ली गयी थी। पर सारी शिक्षा का उद्देश्य वही का वही था। प्रचलित पैमाने के आधार पर सुयोग्य पत्नी, बहू और माँ बनना यहाँ तक कि योग्यताओं के इजाफे में पूरी सावधानी बरती जाती थी कि वे इतनी अधिक न हो जाएँ कि अनुकूल वर ढूंढने में मुश्किल हो।"[2]

अलका सरावगी का जीवन सादगी की पराकाष्ठा है। लेखन की प्रेरणा इनकी अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से समाज का विश्लेषण करती हैं। इन्होंने अपनी शिक्षा संबंधी कठिनाइयों को उजागर करने का कार्य किया है तो दूसरी ओर वे शब्दों के आवरण में ढककर कहती हैं - "आज महिलाओं को लेखन के क्षेत्र में दोहरी-तिहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जहाँ उनके लेखन को भी दोयम दर्जे का समझा जाता है। मीरा से लेकर महादेवी वर्मा तक के ऐतिहासिक काल में जिस तरह लेखिकाओं को अपने स्त्री होने के कारण तरह-तरह के लांछनों, कलंक, प्रताड़नाओं एवं वर्जनाओं का सामना करना पड़ा है, इन दोनों लेखिकाओं की त्रासदी को शोकपूर्ण रागात्मक अभिव्यक्तियों में देखा जा सकता है।"[3]

अलका सरावगी ने पश्चिम बंगाल के कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता से पी.एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है। इनके शोध प्रबंध का विषय 'रघुवीर सहाय का काव्य' था। रघुवीर सहाय नई कविता के सशक्त रचनाकार माने जाते हैं। अलका सरावगी ने शोधकार्य करने उपरान्त प्रयोगशील कहानी और उपन्यास पर लेखन कार्य शुरू किया। इन्होंने इटली के वेनिस विश्वविद्यालय में 2002 में हिंदी और बंगाली साहित्य पर आख्यान दिया। इन्होंने अपनी रूचि अनुरूप पत्रकारिता में डिप्लोमा भी किया है।"[4]

अलका सरावगी का साहित्य के प्रति विशिष्ट अनुराग है। वह अपने हृदय में उत्पन्न भावों के कारण साहित्य के अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती हैं। अलका सरावगी के पिता व्यवसायी जरूर थे परन्तु उनका शेरो शायरी और भाषा के प्रति विशेष अनुराग था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अलका सरावगी को शुद्ध भाषा के संस्कार और भाषा पर कड़ी पकड़ पिता से पैतृक संपत्ति के रूप में मिली है।

अलका सरावगी जी की लेखनी की प्रेरणा के विषय में कृपाशंकर चौबे लिखते हैं -"बालकोष में उन्हें संयोग से काम मिला था, उसी समय एम.ए. का भी विचार आया तथा उस दौरान अशोक केसरिया से परिचय हुआ, जिन्होंने उन्हें लेखन की ओर प्रेरित किया।"[5]

अलका सरावगी को बचपन से ही एक साहित्यिक माहौल मिला जहाँ अपने पिता की रूचि की वजह से साहित्य की ओर झुकाव हुआ। जिस प्रकार यह माना जाता है कि असली गुरु या शिक्षक अच्छी किताबें होती हैं, ठीक उसी प्रकार देश भ्रमण करके भी मनुष्य अच्छा ज्ञान प्राप्त करता है। अलका सरावगी पर यह बात सटीक बैठती है। इन्होंने अपने सामाजिक परिवेश का आत्मसार किया तथा अपनी लेखनी के माध्यम से यथार्थ को उजागर किया। परिणामतः इनका नाम उच्च श्रेणी के कथाकारों में आता है। देश-विदेश के भ्रमण से प्राप्त अनुभव इनके कथा साहित्य का केंद्र बिन्दु हैं। राजेश जोशी के अनुसार-"लेखक मुख्य रूप से दो तरह की यात्राएँ करता है, बाहर की यात्राएँ और भीतर की यात्राएँ। जो लेखक यायावर होते हैं, घुमक्कड़ किस्म के होते हैं, उनकी रचना में दृश्य अधिक होते हैं। जीवन के राग-रंग और चरित्र भी अधिक होते हैं। घुमक्कड़ रचनाकारों के विचार जीवनोमुख अधिक होते हैं, जबकि जो घुमक्कड़ नहीं हैं उनके विचार दार्शनिक प्रवृत्ति के ज्यादा होते हैं। घुमक्कड़ रचनाकार थोड़ा लापरवाह होता है जबकि जो घुमक्कड़ नहीं, वह अधिक सतर्क होता है।"[6]

अलका सरावगी जी लेखन का आरम्भ 29 वर्ष की आयु में करती हैं। सन 1990 ई. में 'आप की हंसी' नामक कहानी से इनकी लेखन की शुरूआत होती है। 'आप की हंसी' नामक कहानी के विषय में मीनाक्षी मुखर्जी द्वारा लिए गए साक्षात्कार में सरावगी जी कहती हैं-"मैं एक सामान्य व्यक्ति जो बहुत हँसता था उससे प्रभावित होकर लेखक बनी, उस समय हम अपने परिवार के साथ जब रहने आये तो उसने बिना किसी सूचना के हमारा समान उठा लिया। वह न ही किसी परिवार का सदस्य था, न ही किसी के घर का नौकर, कोई भी व्यक्ति उस पर ध्यान नहीं देता था, उसे देखकर लोग उसे पागल समझते थे। मैंने हमेशा उस समय को याद करके सामाजिक भेदभाव के बारे में इस व्यक्ति के प्रति बहुत सोच विचार किया और उसी के सम्बन्ध में यह कहानी 'आप की हंसी' लिखी जो बाद में 'वर्तमान साहित्य' पत्रिका में प्रकाशति हुई।"[7]

अलका सरावगी ने देश-विदेश की यात्राएं की हैं। इन यात्राओं के माध्यम से उन्हें अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त हुए, जिसका प्रयोग इन्होंने अपने लेखन में बखूबी किया है। ऐसा कहा जा सकता है कि यात्रा से प्राप्त अनुभव लेखन के लिए अद्भुत अस्त्र है। विश्व के नवीनतम साधनों का उपयोग अपने लेखन के लिए करना एक नवीन कला है। “अलका सरावगी जी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति रखने वाली लेखिका है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में पी.एच.डी. एवं पत्रकारिता में डिप्लोमा के साथ ही विभिन्न भाषाओं का ज्ञान रखती हैं। इनकी कृतियों का अनुवाद अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन, स्पेनिश और अन्य भाषाओं में किया गया है। इनका बहुचर्चित उपन्यास ‘कलिकथा: वाया बाईपास’ को कैम्ब्रिज, टूरिन, नैप्लस, जैसे विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है। अलका सरावगी की विदेशों में उपस्थिति कुछ इस प्रकार दर्ज है-

क. वेनिस विश्विद्यालय, हिंदी और बंगाली साहित्य के मध्य आख्यान, 2002

ख. भारतीय लेखन का प्रतिनिधित्व, belles &Stranges, फ्रांस, 2002.

ग. भारतीय लेखन में सामूहिक यादों पर संगोष्ठी, ट्यूरिन, इटली, 2003.

घ. मोरिशस साहित्य महोत्सव, 2004

ङ. बर्लिन साहित्य महोत्सव, 2004

च. Calendidonna, 2005, उड़ीन, इटली.

छ. फैकफर्ट पुस्तक मेला 2005, 2006

ज. Salondu live, पेरिस, 2007

झ. ट्यूरिन पुस्तक मेला, 2007

ञ. Incroci di Civilia, वेनिस, 2010।”[8]

‘अलका सरावगी जी मारवाड़ी परिवार से थीं। अलका सरावगी की दो बहनें हैं जो अधिक पढ़ी-लिखी नहीं हैं। अलका सरावगी के स्नातक उपाधि प्राप्त करने के पश्चात उनका विवाह मारवाड़ी परिवार के

बड़े बेटे के साथ संपन्न हुआ। इनका परिवार संयुक्त और बड़ा है। अलका जी की दो संतानें हैं एक बेटा मयंक और बेटी सलोनी है, जो इनकी रचना के पाठक भी हैं। इनका बेटा अक्षम है। इन्हें साहित्य लिखने की प्रेरणा अपने बेटे से मिल है। वर्षों के इलाज और हर प्रकार से बेटे को सक्षम बनाने में इनका संघर्ष जारी है। इसी संघर्ष से उनके भीतर रचनात्मकता का उदभव हुआ। अलका सरावगी का अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति गहरा लगाव है।

अलका सरावगी प्रत्येक नारी के लिए प्रेरणा की स्रोत हैं। निडरता इनके अस्तित्व की प्रमुख विशेषता है जिसके कारण उन्होंने कभी समाज में व्याप्त अंधविश्वासों से समझौता नहीं किया। वह अपनी अन्य रचनाओं के माध्यम से निरंतर उसका विरोध करती रही। अलका सरावगी साहित्य जगत में अपनी ख्याति फैलाने वाली नारी मुक्ति के युद्ध की योद्धा हैं। उन्होंने नारी स्वातंत्र्य, चेतना और आधुनिकता के बोध को एक नई दिशा दी हैं। स्त्री के पारिवारिक जीवन और परंपरागत नैतिक मान्यताओं के बीच इनके अंतर्द्वंद का प्रत्यक्ष आभास आज भी इनकी लेखनी में देखा जा सकता है, जोकि स्त्री की छटपटाहट का सहज और ईमानदार दस्तावेज है। "कहने को आज भी पारिवारिक जीवन में महिलाओं को हर प्रकार के समानधिकार प्राप्त हैं लेकिन आज भी वास्तव में घर-परिवार में एक महिला का स्थान भिन्न है। वह आज भी वास्तव में पुरुष शासन में रह रही है। वैसे पुरुष और स्त्री पर कोई मौलिक असमानता नहीं है। दोनों का मन एक ही है।"[9]

नवें दशक में भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव विस्थापन की त्रासदी के कारण आया, जिसके कारण विस्थापन ने साहित्य के केंद्र बिंदु से होकर मुख्यधारा में अपनी जगह बनायीं। हिंदी कथा साहित्य इससे सर्वाधिक प्रभावित हुआ। वर्तमान दौर में विस्थापन से जुड़ी संकट व पहचान के संघर्ष को व्यक्त करने वाले अनेक लेखक हैं, इन लेखकों में महिला कथाकार अलका सरावगी का प्रमुख स्थान है। उन्होंने स्वतंत्र रूप से लेखन करते हुए अनेक उपन्यास, कहानी संग्रह लिखे हैं। इनके साहित्य में स्वतंत्रता

संघर्ष, विभाजन की त्रासदी, मानसिक द्वन्द, मानवतावाद, स्त्री मुक्ति चेतना तथा विस्थापन का दंभ आदि का प्रभाव दिखता है । विभाजन के प्रति विद्रोह विस्थापन मुक्ति का पहला कदम था, परंतु देश की राजनीतिक उलटफेर के कारण विस्थापित अपने अस्तित्व की पहचान के लिए बेचैन है और अपनी अस्मिता की पहचान तत्कालीन परिस्थितियों के कारण उजागर नहीं कर सकता। यदि किसी भी विस्थापित व्यक्ति को अपनी स्वयं की पहचान स्थापित करनी है तो उसे समाज, राजनीति एवं परिवार से विद्रोह करना ही होगा।

"अलका सरावगी के नवीन उपन्यास 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' का प्रकाशन 2020 में हुआ था। उपन्यास का नायक कुलभूषण जैन है परन्तु उसके काम ऐसे नहीं हैं कि वह अपने कुल का भूषण बन] सके। वह देखने में अपने भाइयों से अलग और कुरूप है। पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान के विभाजन के दौरान वह बांग्लादेश के कुष्टिया नाम की जगह से कोलकाता आ बसा है। कोलकाता में आकर वह अपने ही परिवार के बीच विस्थापित महसूस करता है। कुलभूषण जैन कोलकाता में अपना नाम बदलकर रहता है और वह अपने परिवार के लिए आवश्यक चीजों का बंदोबस्त करता है। उपन्यास के पूरे एक खंड में कुलभूषण के दोस्त श्यामा धोबी के बारे में बताया गया है जो उसके अनुरूप ही कुरूप है, लेकिन वह दिल का साफ़ है। वह श्यामा धोबी द्वारा दिए गए भूलने के बटन का उपयोग करता है लेकिन फिर भी उसके मन में सदैव कुष्टिया की यादें ताजा है। जिन परिस्थितियों में कुलभूषण को कोलकाता आना पड़ा था, वह बहुत ही पीड़ादायक है। आज भी उसके मन में गंगा से ज्यादा गोराई बसता है। उपन्यास में डॉ. कासिम द्वारा अनिल मुखर्जी की सहायता करने का वर्णन अत्यंत ही मार्मिक रूप में दिखता है। दंगों के भयावह रूप का वर्णन उससे प्रभावित जिन्दगियों का यथार्थ चित्रण है।"[10]

चंद्रकला त्रिपाठी के अनुसार-"विस्थापन की गहरी अंतर्छायायें, इतिहास और देश काल को हाड़-मांस में मिला कर कह देना और ऐसी सघन कथा भूमि, मानव स्वभाव के ट्रेजिक-कोमिक की ऐसी गति,

चरित्रों के नाभिक में प्रवेश की ऐसी क्षमता, बहुत बांधती रही है। यह किताब कथा के भीतर कथाओं को उनके पूरे प्रवाह और जैविक में विन्यस्त कर यह महा आख्यान लम्बी राज चला है । इसे एक साथ देश और मनुष्य दोनों के निर्वासन, विस्थापन की गहरी तकलीफ में उतरना जो था।"[11]

अलका सरावगी का पहला कहानी संग्रह 1996 ई. में प्रकाशित हुआ था। इनके पहले कहानी संग्रह का नाम 'कहानी की तलाश में' है। वर्ष 2000 में दूसरा कहानी संग्रह 'दूसरी कहानी' के नाम से प्रकाशित हुआ। 'दूसरी कहानी' नामक कहानी मानसिक रूप से अस्वस्थ बच्चे की कहानी है, जिसमें यह दर्शाया गया है कि जीवन के प्रति गहरी आस्था, जीवन के प्रति जिजीविषा और अतिशय लगाव, धैर्य, हिम्मत, कर्तव्यनिष्ठा, कर्मठता और सकारात्मक उर्जा स्वस्थ जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

"आज से करीब 20 साल पहले साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित अलका सरावगी हिंदी की प्रमुख कथाकारों में से एक हैं। वह कृष्णा सोबती के बाद दूसरी लेखिका थीं जिन्हें यह पुरस्कार पाने का गौरव हासिल है। अपने पहले उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाईपास' से साहित्य की दुनिया में सिक्का ज़माने वाली लेखिका अलका सरावगी किस्सागोई में सिद्धहस्त हैं। वह सहज, सरल एवं प्रांजल भाषा में अपनी बात पाठकों तक पहुँचा देती हैं। इस बीच उनके कई उपन्यास और कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। हर बार अलका सरावगी अपनी रचना से नया देती हैं। सौम्य एवं विनम्र व्यक्तित्व की धनी अलका सरावगी की कहानी 'एक पेड़ की मौत' केवल एक वृक्ष की कहानी नहीं है, बल्कि इस कहानी के नायक की भी कहानी है। प्रकृति से मनुष्य का संबंध सदियों से है, लेकिन सभ्यता के विकास के क्रम में यह संबंध छिन्न-भिन्न भी हुआ है। अलका जी ने एक कवि दृष्टि के साथ यह खूबसूरत कहानी लिखी है। वाकई एक पेड़ की मौत दर्दनाक घटना हेतु जिसकी तरफ हम कई बार ध्यान भी नहीं देते। अलका सरावगी ने इस कहानी में मनुष्य की इस संवेदनशीलता को बचाए रखा है। इन्होंने पेड़ के माध्यम से जो एक रूपक बनाया है वह कहानी को एक नई दिशा प्रदान करता है।"[12]

“अलका सरावगी का प्रथम उपन्यास ‘कलिकथा: वाया बाइपास’ है, जो 1998 में प्रकाशित हुआ। हिंदी साहित्य के जगत में अत्यंत ही चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास को सन 1998 ई. में ‘श्रीकांत वर्मा’ पुरस्कार मिला। वर्ष 2001 में ‘साहित्य अकादमी’ पुरस्कार तथा 2006 में ‘बिहारी पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया है। ‘कलिकथा: वाया बाइपास’ उपन्यास से हम इतिहास की अपनी समझ और ऐतिहासिक, सर्जनात्मक दृष्टि बना सकते हैं। उपन्यास का नायक ‘किशोर बाबू’ और उनके परिवार की चार पीढ़ियों की सुदूर रेगिस्तानी प्रदेश राजस्थान से पूर्वी प्रदेश बंगाल की ओर पलायन और उससे जुड़ी उम्मीद एवं पीड़ा की कहानी बयाँ करती है। यह आजाद भारत में निर्मित सामाजिकता के प्रचलित पैमानों पर जीते मनुष्य की भीतरी पहचान से शुरू होती है। यह उपन्यास अंग्रेजों द्वारा भारत में रेलवे लाने के शुरूआती दिनों से लेकर सन 2000 तक के इतिहास का अवलोकन करती है। इसमें कोलकाता शहर का इतिहास भी देखा जा सकता है। उपन्यास में भारत में हो रही सामाजिक नैतिक मूल्यों के निर्माण और हवस की मार्मिक कहानी का भी वर्णन है। उपन्यास के नायक किशोर बाबू की बाइपास सर्जरी के बाद की स्थिति को बिलकुल ही अलग सिरे से देखने को मिलती है। वे किशोर बाबू जो जीवन भर दक्षिणी कोलकाता के अभिजात समाज का हिस्सा रहे वह मानसिक रोग से पीड़ित हो जाते हैं। कोलकाता शहर की अभद्र सड़कों पर भटकते हुए दिखते हैं और अपनी इसी यात्रा में अपने परिवार के पुरखों से लेकर अपनी तीन वर्षीय नातिन के समय तक को खंगाल देते हैं।”[13]

अलका सरावगी का दूसरा उपन्यास ‘शेष कादम्बरी’ है, जिसका प्रकाशन 2001 में हुआ। ‘शेष कादंबरी’ उपन्यास को के. के. बिरला फाउंडेशन के ‘बिहारी पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया। यह उपन्यास नवीन प्रस्तुति के साथ हमारे समक्ष उपस्थित होता है। उपन्यास की नायिका रूबी दी हैं, जिनके जीवन संघर्ष में वैभवपूर्ण अतीत का वर्णन है, जो एकाकी और अंतर्मुखी जीवन के आत्मालाप का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। उपन्यास में रूबी गुप्ता का आत्मविश्लेषण ही नहीं, बल्कि सात पीढ़ियों के रईस

की गोद ली गयी बेटी की दास्तान को उजागर करता है। समाज से सताई स्त्रियों की व्यथा को दर्शाती है। प्रस्तुत उपन्यास वृद्धा के अकेलेपन और व्यर्थता बोध से उपजे अस्मिता के संकट को भी उजागर करती है। "अलका सरावगी का उपन्यास 'सोशल वर्क और सोशल जस्टिस' इन दो शब्दों के बीच के स्पेस का मोहक व मार्मिक प्रतिबिम्बन है।"[14]

वृद्ध और युवा जीवन-दृष्टि के फर्क को रेखांकित करने वाला यह उपन्यास जीवंत लेखन का प्रतीक है। जिसमें उन्नीसवीं सदी में जन्मे, रूबी दी के मामा देवी दत्त का व्यक्तित्व रूबी दी के लिए 'आइडेंटिटी क्राइसिस' का कारक बनकर उभरता है। इस 'आइडेंटिटी क्राइसिस' की गिरफ्त में रूबी दी अपनी किशोरावस्था में ही आ चुकी हैं। इस गिरफ्त से उबरने में वह निरंतर प्रयासरत है। रूबी दी 'सोशल वर्क' के आडम्बर से जुड़ी हुई है और अंततः अपने नातिन 'कादम्बरी' में अपनी शेष कथा देखने को बाध्य हुई। शेष कादम्बरी उपन्यास जीवन के ऐसे प्रवाह को उद्घाटित करती है जो जीवन का उदात्त है। इनकी यह औपन्यासिक कृति उपभोक्तावादी मूल्यों के बरक्स उदारवादी मूल्यों की स्थापना भी करती है।"[16] अलका जी का यह उपन्यास एक सदी से दूसरी सदी तक के समय और स्मृतियों के इतिहास के तनाव से नई उत्सुकता जगाता है और साथ ही उपन्यास के परिचित ढाँचे को एक बार फिर तोड़ने की नई चुनौती पैदा करती है।"[15]

"अलका सरावगी का तीसरा उपन्यास 'कोई बात नहीं' है जो 2004 ई. में राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का मुख्य कथ्य शशांक नामक एक अपाहिज बेटे की दर्द भरी दास्तान है। शशांक का शरीर सामान्य बच्चों की तरह नहीं है, जबकि उसका दिमाग पूरी तरह विकसित है। शशांक सत्रह साल का एक लड़का है जो कलकत्ता के नामी मिशनरी स्कूल में पढ़ते वक्त अपनी गैर बराबरी को जीता है। शशांक का एकमात्र दोस्त एंग्लो इंडियन लड़का है जो उसी की भांति एक किस्म का जाति बाहर या आउटकास्ट है। दूसरी तरफ शशांक की दादी की कहानियाँ–दादी के अपने घुटने भरे जीवन की बार-

बार उन्हीं शब्दों और मुहावरों में दोहराई जाती कहानियाँ, जिनका कोई शब्द कभी अपनी जगह नहीं बदलता। लेकिन सबसे विचित्र कहानियाँ उस तक पहुँचती हैं। जतीन दा के मार्फत, जिनसे वह बिना किसी और के जाने, हर शनिवार विक्टोरिया मेमोरियल के मैदान में मिलता है। ये सभी कहानियाँ आतंक और हिंसा के जीवन से जुड़ी कहानियाँ हैं जिनके बारे में हर बार शशांक को संदेह होता है कि वे आत्मकथात्मक हैं, इस पर संदेह के निराकरण का उसके पास कोई रास्ता नहीं है। तभी शशांक के जीवन में एक भयानक घटना घटती है जिसके कारण उसके जीवन के परखच्चे उड़ जाते हैं।"[16]

अलका सरावगी द्वारा लिखित उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' रहस्यमय कथावृत्त को प्रस्तुत करता है। इसका परिप्रेक्ष्य समकालीन बाजारवाद है। वैश्विक पूँजीवाद इसका कारक है। उपन्यास आधुनिक दौर की कथा कहते हुए हमें इंसान के बुनियादी सरोकार के करीब ले जाता है। "अलका सरावगी का यह उपन्यास कॉर्पोरेट इंडिया की तमाम मान्यताओं, विडम्बनाओं और धोखों से गुजरता है। 'अलका सरावगी का यह उपन्यास संकल्पना का उपन्यास है। नव वैश्विक पूँजी और बाजारवाद के खेल में डूबे औद्योगिक प्रतिष्ठानों 'कॉर्पोरेट हाउसिंग' की दुनिया का अत्यंत सूक्ष्म और विस्तार में अंकन आकार अपना सचिन्तित विचार प्रस्तुत करती हैं। भारत में बन रही अमीरी गरीबी की दुनिया के अंतर्बाह्य को उजागर कर पाठक के संवेदन तंत्र और सोच को जगाती है।"[17]

'उपन्यास के केंद्र में एक पात्र है- के.वीन. शंकर अय्यर। उपन्यास में जिसे प्रायः के. वी. नाम से संबोधित किया जाता है। "उम्र के जिस मुकाम पर लोग रिटायर हो जाते हैं, वहीं के. वी. शंकर अय्यर के पास नौकरियाँ चक्कर लगा रही हैं। के. वी. मानते हैं कि इण्डिया के 'इकनोमिक बूम' में देश की एक अरब जनता के पास खुशहाली भरे सपने हैं। पूरी दुनिया का शासन सरकार के हाथ में नहीं, बल्कि कॉर्पोरेट कंपनियों के हाथ में हैं। मल्टीनेशनल कंपनी का एक्जीक्यूटीव गुरुचरण राय है जो के. वी. की बातें बिना बताये बीच-बीच में पहाड़ों पर भी जाता है। अन्ततः वह कंपनी के काम से मध्यप्रदेश के सुदूर प्रान्त में

जाता है और लापता हो जाता है। 'एक ब्रेक के बाद' जिसमें वह आई-गयी खबर हो जाता है। कुछ समय पश्चात के. वी. को उसकी डायरियां मिलती हैं जिसमें लिखी बातों का कोई तुक नजर नहीं आता है।'[18]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' कॉर्पोरेट इण्डिया की तमाम मान्यताओं, विडंबनाओं और धोखों से गुजरता है। उपन्यास कथात्मक साहित्य का सर्वोत्कृष्ट माध्यम होता है। यह कथावस्तु के माध्यम से मानव जीवन में उत्पन्न घटनाओं का उद्घाटन करती है जिसके आसपास कई सारे प्रसंग आते हैं। उनकी आपसी संगति होती है | इसलिए जीवन को समझने के लिए उपन्यास विधा सबसे कारगर रचना होती है। उपन्यास विधा में जीवन के यथार्थ चित्र को उपास्थित कर देने का प्रयास किया जाता है। अलका सरावगी का हिंदी उपन्यास जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनका पूरा कथा साहित्य स्वतंत्रता के पश्चात के भारतीय मध्यवर्गीय के वातावरण को समझने का प्रयास है। अलका सरावगी के उपन्यासों की कथावस्तु की संरचना उसकी अंतर्वस्तु पर निर्भर है जो पाठक को सदैव अपनी ओर लगातार खींचे रहती है। अतः अलका सरावगी आधुनिक भाव संरचनाओं और उसके सामाजिक विस्थापन की बड़ी कथाकार हैं।

अलका सरावगी आधुनिक युग की सजग कथाकार हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं को पकड़ने की कोशिश की है | आज के समय में जनसंचार सूचना का एक मजबूत माध्यम है। जनसंचार ने विज्ञापन के माध्यम से अपनी कमाई भी सुनिश्चित कर ली है। विज्ञापनों के अत्यधिक प्रचार-प्रसार से समाज पर बहुत गहरा प्रभाव दिखता है। यह जनता के मन पर गहरी छाप छोड़ता है और उत्पादकों के प्रति आकर्षण का भाव पैदा करते हैं। अलका सरावगी जनसंचार द्वारा प्रसारित विज्ञापनों के आक्रामक प्रभाव को पहचान लेती है। इन्होंने अपने उपन्यास में लिखा है- "बस्तर के गाँव में अपनी झोपड़ी में बैठकर आदिवासी टी. वी. पर वाशिंग मशीन में कपड़े धुलते देख रहा है और डोर फ्रिज में जाने कब से रखी ताजा लौकी और टमाटर की गाथा सुन रहा है। इए देश की एक अरब जनता अब एक साथ सपने देख रही है।"[19] इस प्रकार

एक गरीब व्यक्ति भी विज्ञापनों के प्रभाव में आता है। आज का दौर भूमंडलीकरण है जिसके मध्य जनसंचार देखा जाता है जो ज्ञान धन, हिंसा तीनो पर प्रभाव जमा रहा है। यहाँ कहना ठीक होगा कि "व्यापार तंत्र को भारत जैसा बहुसंख्यक उपभोक्ता वाला देश माल बेचने का सबसे अच्छा बाजार दिखाई देता है इसलिए हमें विश्व बाजारवाद की नई ताकतों, उन योजनाओं और पैटर्नों को समझना जरूरी है।"[20]

इस प्रकार अलका सरावगी अपनी रचनाओं में आज की मीडिया के बहुआयामी पहलुओं को उजागर करती हैं। मीडिया की सशक्तता प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करती है। ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य मीडिया के प्रभाव से चारों तरफ से जकड़ा हुआ है। अतः मीडिया के बीच लोग फंसे हुए हैं। मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को देखा जाता है। लेकिन कथाकार ने समाज के प्रति जबाबदेही भूमिका निभाते हुए सकारात्मक पहलुओं को उजागर किया है और साथ ही विशेष रूप से नकारात्मक पहलुओं को भी चित्रित किया है।

आज का आधुनिक युग समानता का युग है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति के अवसर प्राप्त कर रहा है। अपने सर्वांगीण विकास के लिए आज हर किसी को समान अधिकार प्राप्त है। हिंदी साहित्य के जगत में नारी विमर्श एक ज्वलंत विषय है। स्त्री को केंद्र बनाकर कई विधाएं प्रकाश में आ चुकी हैं। आज के समय की लेखिका अलका सरावगी एक ऐसी कथा लेखिका है, जिनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं का भंडार है। इनके साहित्य का प्राण स्त्री को माना जाता है परंतु स्त्री विमर्श को लेकर उन्होंने नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो स्त्री विमर्श की परंपरा से हटकर है। अलका सरावगी अपने विचारों से स्वतंत्र लेखिका है। इन्होंने अपनी रचनाओं में एक ओर कई नारी पात्रों द्वारा नारी शोषण का वर्णन किया है तो दूसरी ओर आज की सशक्त हो रही नारी का भी चित्र प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद', 'कोई बात नहीं', 'कलिकथा वाया बाईपास' आदि उपन्यासों में नारी के दुर्गा

काली के रूप का वर्णन किया गया है। लेखिका स्त्री के अनेक पक्षों पर प्रकाश डालती है। वह कभी संघर्षरत हैं तो कभी अपने जीवन के मायने तलाश करती हैं।

अलका सरावगी : सृजन

अलका सरावगी साहित्य की दुनिया में अपने लेखन के प्रति ईमानदार रही हैं। वे अपने आस-पास के वातावरण और संवेदनाओं से प्रेरित होती हैं और अपनी कलम से सशक्त रचना का निर्माण करती हैं। अपनी रचना को गति, रंग, रूप, आकार आदि प्रदान करती हैं। अलका सरावगी सफल उपन्यासकार के साथ-साथ कहानीकार के रूप में भी जानी जाती है, जिसके माध्यम से एक साहित्यकार की प्रतिभा की परख होती है। अलका सरावगी के व्यक्तित्व के अनुरूप ही इनका रचना संसार है। इनके जीवन के कुछ न कुछ अंश इनके साहित्य में अवश्य मिलते हैं। अलका सरावगी द्वारा रचित सभी कृतियाँ चर्चित है जो इस प्रकार हैं- अलका सरावगी के कुछ प्रमुख उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाइपास', शेष कादम्बरी, 'कोई बात नहीं', 'एक ब्रेक के बाद', जानकीदास तेजपाल मैन्सन' और 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' हैं।

अलका सरावगी उपन्यास लेखन क्षेत्र में अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखिका हैं। अलका सरावगी के कथा साहित्य का इटालियन, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच और समस्त भारतीय भाषाओँ में अनुवाद हुआ है। इनके बहुचर्चित उपन्यास 'कलिकथा: वाया बाइपास' को कैम्ब्रिज, टुरिन, नैप्लास आदि विदेशी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। स्वयं अलका जी द्वारा उसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है। 'शेष कादंबरी' उपन्यास का बांग्ला भाषा में अनुवाद मीनाक्षी मुखर्जी द्वारा किया गया और इटालियन भाषा में अनुवाद अंग्रेजी में "ओवर टू यू कादंबरी' नाम से हुआ है। इनकी कुछ प्रमुख कहानियों में 'कहानी की तलाश में', 'दूसरी कहानी' है और बाल साहित्य के अंतर्गत 'कभी शैतानी न करने वाला लड़का' है।

अलका सरावगी को बेहतर लेखन एवं सृजन के लिए अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित किया गया है। उनके द्वारा प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कार निम्नलिखित हैं-

सन 1998 में ‘कलिकथा वाया बाईपास’ उपन्यास के लिए ‘श्रीकांत वर्मा’ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन 2001 में ‘कलिकथा: वाया बाइपास’ उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। सन 2006 में ‘शेष कादंबरी’ उपन्यास के लिए बिहारी पुरस्कार’ से पुरस्कृत किया गया। 2021 में उपन्यास ‘कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए’ के लिए कलिंग साहित्य महोत्सव द्वारा सर्वश्रेष्ठ हिंदी किताब का ‘बुक ऑफ़ द ईयर’ अवार्ड से सम्मानित किये जाने की घोषणा हुई है।

संक्षेप में, अलका सरावगी अपनी विविध रचनाओं से कई पहलुओं को परिलक्षित करती हैं। इन्होंने अपने साहित्य को अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया है। इनके साहित्य को पढ़ने से व्यक्ति समाज को देखने का नजरिया परिवर्तित होता है। वह अपने साहित्य में संवेदनशील और समाजपयोगी चित्रण बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत करती हैं। अलका सरावगी स्त्री की विभिन्न परतों को खोलकर, उसके मन में उत्पन्न जिजीविषा को खुलेपन से चित्रित करती हैं। मानव जीवन की विवशता व अकेलापन आदि इनकी कहानियों तथा उपन्यासों में देखने को मिलता है। हम कह सकते हैं कि समकालीन साहित्य के विकास में इनका प्रमुख योगदान है क्योंकि इनके साहित्य में भोगे हुए यथार्थ जीवन की जटिलता और त्रासदी का प्रासंगिक चित्रण देखने को मिलता है। अलका सरावगी की रचनाओं में अभिव्यक्त ऐतिहासिक, राजनैतिक एवं धार्मिक परिदृश्य का वर्णन होता है। यह हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यासकार के रूप में अधिक जानी जाती हैं। इनका उपन्यास मूलतः कोलकाता जीवन पर आधारित है। अपने विशिष्ट मारवाड़ी तेवर के कारण इनकी रचनाओं में विशेष प्रकार का विलक्षण, खुलापन और बेबाक सहजता समाहित है। अलका सरावगी किसी विशेष विचारधारा से प्रेरित न होकर वैयक्तिक और सामजिक अनुभवों से प्राप्त जीवन दृष्टि के आधार पर लिखती हैं। उनकी कलात्मक उर्जा को किसी भी रूप में नकारा नहीं जा सकता। वे परिवार की सीमाओं में न रहकर अपने रचना संसार में राजनीतिक विसंगतियों को भी चित्रित करती हैं। कुल मिलाकर कहा जाये तो अलका सरावगी की रचनाएं इस अर्थ में महत्वपूर्ण हैं कि इनमें संबंधों के रहस्यमय और शुद्ध

मानसिक आधार के बदले एक ठोस और वास्तविक परिस्थतियों के भीतर संघर्ष करती हैं और टूटती हुई इकाइयों का मार्मिक स्वरूप खड़ा करती हैं। जिसके कारण उनकी रचनाएं सामान्य पाठक तक अपनी पहुँच बनाने में सफल हैं।

संदर्भ

1. https://www.scotbuzz.org. Date: 25-10-2021
2. वही.
3. प्रेरणा; पत्रिका; अरुण तिवारी; देशबंधु भवन; 26 बी; भोपाल-462042; जुलाई दिसम्बर, 2010; पृ. 9.
4. https://www.shabdankan.com. Date: 25-10-2021.
5. https://www.scotbuzz.org. Date: 25-10-2021.
6. जोशी, राजेश; एक कवि की नोटबुक; राजकमल प्रकाशन, 1-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरयागंज, नई दिल्ली- 110002; संस्करण:2014; पृ. 133.
7. वही, पृ. 134.
8. https://www.shabdankan.com. Date: 25-10-2021.
9. सिंघवी, कमला; नारी: भीतर और बाहर; नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, अंसारी रोड दरिया गंज; नई दिल्ली-110001, संस्करण: 1972; पृ. 20.
10. वही, पृ. 35.
11. सरावगी, अलका; कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए; वाणी प्रकाशन, 4695, 21-A, दरियागंज, नई दिल्ली-110002; संस्करण: 2020; पृ. 1, (प्रतिक्रियाएँ)
12. https://janjwar.com/past/alka-sarawgi-hindi-story. Date: 25-10-2021.
13. चव्हाण, डॉ. अर्जुन; समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष; वाणी प्रकाशन, 4695, 21-A, दरियागंज, नई दिल्ली-110002; प्रथम संस्करण-2008; पृ. 146.
14. सरावगी, अलका; भारतीय साहित्य संग्रह (भारतीय साहित्य का अद्वितीय संकलन), नारी विमर्श, शेष कादंबरी; https://www.pustak.org/index.php/books/book details/ Date: 24-10-2021.
15. सरावगी, अलका; https://www.bhartiyasahityas.com/product/shesh-kadambari- Date: 23-10-2021.
16. सरावगी, अलका; शेष कादंबरी; राजकमल प्रकाशन, 1-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरयागंज, नई दिल्ली- 110002; संस्करण 2004; कवर पेज.
17. सरावगी, अलका; कोई बात नहीं; राजकमल प्रकाशन, 1-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरयागंज, नई दिल्ली- 110002; संकरण: 2015; उपन्यास के बुक फ्लैप से.

18. सिंह, पुष्पपाल; 21 वीं शती का हिंदी उपन्यास; राधाकृष्ण प्रकाशन, 1-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरयागंज, नई दिल्ली-110002; संकरण: 2015; पृ. 272.
19. अग्रवाल, रोहिणी; हिंदी कहानी वक्त की शिनाख्त और सृजन का राग; वाणी प्रकाशन, अशोक राजपथ, पटना विस्वविद्यालय के पास, पटना: 800004; प्रथम संकरण: 2015; पृ. 80.
20. शर्मा, मैना; अलका सरावगी के उपन्यास तराई में जनसंचार विमर्श; https://www.apnimaati.com; Date: 23-10-2021.